खुतबात ए फकीर /५

उर्दु जिल्द ३० से इन मज़मुनो का लिप्यांतरण किया गया है.

पीर ज़ुल्फीकार नक्शबंदी दा.ब.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

1. रिज़्क की परेशानी के असबाब

अल्लाह के रसूलﷺ ने अपनी तालीमात मे रिज़्क की परेशानी के असबाब भी बता दिये, इसलिये इस पर दिली यकीन से अमल करे.

१. नमाज़ का एहतेमाम.

२. इमाम करतबी(रह) फरमाते है, कसरत से इसतिगफार और गुनाहो की माफी मांगने से अल्लाह

कौमो के रिज़क फेला देते है.

३. अल्लाह का इरशाद है, और तुम अल्लाह की राह मे जो खर्च करोगे उसका बदला मिल कर रहेगा, सुरे जासिया/३९ इस्का मतलब ये हुवा के जो तुम्हारे पास पहले से रिज़क है इस्को निकालोगे तो दूसरा रिज़क मिलेगा.

४. अल्लाह का इरशाद है, और जो अल्लाह के रास्ते मे हिज़रत करेगा उसे पनाह की जगह भी मिलेगी और रिज़क की ज़्यादती भी मिलेगी सुरे निसा/१००.

५. अल्लाह का इरशाद है, और अगर बस्ती वाले इमान लाते और तकवा इखतियार करते तो हम उन पर आसमान और ज़मीन से बरकतो के दरवाज़े खोल देते. (सुरे आरफ/९६).

६. हदीस मे है ए आदम की औलाद तू अपने आप को मेरी इबादत के लिये फारिग करले, मे तेरे सीने को मालदारी से भर दूंगा, और तेरे फिक्र को बन्द कर दूंगा.

७. हदीस मे है, कसरत से हज और उमरा करने वाला मोहताज़ नही होता.

८. हदिस मे है, जो बन्दा ये चाहे के मेरी उमर ज़्यादा हो और मेरा रिज़क ज़्यादा हो उसको चाहिये के अल्लाह से डरे, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करे, और सिला रेहमी करे.

९. अल्लाह का इरशाद है, जो तुम मे कमज़ोर होते है

उन्की वजह से तुम को रिज़्क दिया जाता है.

१०. अल्लाह का इरशाद है और जो अल्लाह पर भरोसा करता है अल्लाह उस्के लिये काफी हो जाता है. (सुरे तलाक).

११. अल्लाह का वादा है के जो शुकर अदा करता है मे उस पर नेमते और ज़्यादा कर देता हु.

१२. हदीस मे है पांच चीझो से रिज़्क ज़्यादा होता है, (१)हमेशा सदका देना (२)सिलारेहमी (३)जिहाद (४)हमेशा बावुज़ु रेहना (५)वालिदेन की फरमा बरदारी.

१३. चाश्त की नमाज़ पढना.

१४. सुरे वाकिया की तिलावत.

१५. खूब दुआ करना.

हुजूर صلى الله عليه وسلم ने उन्को ये दुआ सिखायी ए अल्लाह मे तेरी पनाह चाहता हु फिकर और रंज़ से, और तेरी पनाह चाहता हु बेब्स हो जाने से और सुस्ती से, तेरी पनाह चाहता हु बुज़दिली और कंजूसी से, और तेरी पनाह चाहता हु करज़े के बढ जाने से और लोगो के दबाव से.

हुजूर صلى الله عليه وسلم ने फरमाया क्यू परेशान होते हो? ये दुआ पढ लिया करो, अल्लाह का नाम अपनी जान व माल व दीन पर, ए अल्लाह अपने फैसले से मुझे राज़ी फरमादे, और जो मुकद्दर फरमाये उस्मे बरकत अता फरमा, ताके

जिसे आप देर से दे उस्मे जल्दी और जिसे आप जल्दी नवाज़े उस्मे देर ना चाहू.
हुजूर ﷺ इस उम्मत को बेसहारा छोड कर नही गये, जिस जिस चीझ की ज़रूरत थी वो सब कुछ बतला दिया है, हमारे ज़ीम्मे है के हम इन अमल को करे, अल्लाह अमल की तौफीक नसीब फरमाये, आमीन.

2. तंगदस्ती के असबाब

कुछ अमल ऐसे है जिन्के करने से रिज़क बन्द हो जाता है उन्से बचने की फिकर करे, हदीसो मे वो अमल का ज़ीकर है जिन्से रिज़क बन्द हो जाता है.

१. खडे होकर जूते पेहेन कर या नंगे सर खाना खाना.

२. बैतूल खला मे नंगे सर जाना या बात करना.

३. मेहमान को बोझ समझना.

४. हाथ धोये बगैर और बिस्मिल्लाह के बगैर खाना खाना.

५. खाने के बर्तन को बाद मे साफ ना करना.

६. मस्जीद के अन्दर दुनिया की बाते करना.

७. फकीर (भिकारी) को ज़िडक देना.

८. मगरिब के बाद बगैर मजबूरी के सोजाना.

९. जान बुज़कर नमाज़ कज़ा कर देना.

१०. झूठ बोलना.

११. गाने बजने मे दिल लगाना.

१२. औलाद को बुरा भला केहना और कोसना.

१३. कुरान को बे वुज़ु पकडना.

१४. नामरहम को देखना.

१५. घर वालो से लडते रेहना.

इन्मे से ज़्यादा तर बाते वो है जो हम करते है, फिर रिज़क के दरवाज़े तो हमने ही बन्द किये है, तो जो अमल हदीसो मे रिज़क की बढोतरी के बताये गये है वो करे ताके दरवाज़े खुल जाये, और वो अमल जिन्से रिज़क के दरवाज़े बन्द होते है उन्से बच्चे, अल्लाह हमे इस्की समझ नसीब फरमाये और इस दुनिया मे अल्लाह हमे नेकी को अपनी ज़िन्दगी का मकसद बनाकर जीने की तौफिम अता फरमाये, आमीन.

3. अल्लाह की तकसीम पर राज़ी रहे

अल्लाह का इरशाद है उनके दरमियान रोज़ी को हमने तकसीम किया है, (सुरे जुखरूफ 32) इसलिये मोमीन अल्लाह की तकसीम पर राज़ी रहे, अपनी तरफ से पसीना बहाये, ये उसकी ज़ीम्मेदारी है उसके बाद दाल रोटी भी मिल जाये तो अल्लाह का शुक्र अदा करे, हजरत दावुद(अल) को फरमाया गया ए दावुद(अल) अगर तुझे खाने मे कभी सडी हुवी सबजी भी मिल जाये तो

सबजी को मत देखना, इस बात को देखना के अल्लाह ने जब रिज़्क को तकसीम किया तो मे भी उसे याद था, इससे बडी और क्या बात हो सकती है.

4. दरमियानीपन का सबक

इस्लाम ने दरमियानीपन का सबक दिया है, दो हदे होती है, एक तो ये के आदमी इबादत मे इतना लग जाये के वो दुनिया ही को छोड दे, ये राहबानीयत है ये मना है, और दूसरा ये के इतना दुनिया के पीछे लग जाये के वो रोटी, कपडा और मकान को ही अपनी ज़िन्दगी का मकसद बना लेता, ये इबाहीयत है ये भी मना है दरमियानी रास्ता अपनावो अपनी ज़रूरीयात पूरी करने के लिये कम काज़ करो.

5. लोगो को छोटा अल्लाह न बनावो

अक्सर लोग कहते है किसी ने कुछ कर दिया है, रिज़्क बांध दिया है, क्यू लोगो को छोटा अल्लाह बनाते हो, अगर अल्लाह रिज़्क देना चाहे तो सारी दुनिया के इन्सान जमा होकर उसको बन्ध नही कर सकते, और अगर अल्लाह रिज़्क ना देना चाहे तो सारी दुनिया के इन्सान जमा होकर उसको रिज़्क नही दे सकते, जब रिज़्क का जिम्मा अल्लाह ने ले लिया है, तो फिर इतनी

घबराहट किस बात की? मोमिन को इस नजर से देखना है के मुझे रिज़्क के लिये हाथ हिलाने और हरकत करनी है और इस हरकत मे बरकत अल्लाह को देनी है, जो मेरा हिस्सा है वो मुझे ज़रूर मिलेगा.

6. माल ईमान के लिये ढाल है

आज के दौर मे माल इन्सान के ईमान के लिये ढाल है, वरना जिसके पास माल नही है वो तो लोगो की जेब का रूमाल है, जेब का रूमाल ऐसा होता है के इससे नाक साफ की और फेक दिया, गरीब आदमी का आज यही हाल है लोग उस्से मतलब निकाल लेते है और फिर उसे एक तरफ कर देते है, ऐसे बन्दे की माआशरे मे कोई हेसियत नही होती.

7. मेहनत में अज़मत है.

हुजूर ﷺ को एक सहाबी(रदी) मिले और मुसाफा किया आप ने देखा के उनकी हथेलियो मे गट्टे पडे हुवे है और सखत है, पूछा के ये इतने सखत क्यू है? अर्ज़ किया अल्लाह के हबीब मज़दूर हू पथ्थर तोडता हू और यही मेरी रोज़ी का जरिया है, हुजूर ﷺ उनको मुसकुराकर देखा और फरमाया जो हाथ से मेहनत मज़दूरी करता है, वो अल्लाह का दोस्त होता है, कितनी खुबसूरत

शरियत है के इन्सान अपनी और घर वालो की ज़रूरीयात के लिये कदम उठाता है तो इसको भी इबादत का दर्ज़ा दे दिया है.

8. रोटी की फिक्र

आज के दौर मे इन्सान ने रोटी और रिज़क को अपनी ज़िन्दगी का मकसद बना लिया है, रोटी को इतनी एहमियत कभी भी नही थी जितनी आज है, इसके लिये वो अपने मालिक (अल्लाह) को नाराज़ कर बेठता है, हलाल और हराम का फर्क खतम कर देता है, हर बन्दा पहले से ज़्यादा रोटी हासिल करने के चक्कर मे है, और बात ये है के जितना पेट भरे हुवे होने की वजह से बिमारिया आज है, तारीख मे पहले इतनी कभी नही थी, और गौर करे तो ज़्यादा खाकर मरने वालो की गिनती कम खाकर मरने वालो से बहोत ज़्यादा है.

9. रिज़क मौत से पहले बन्दे तक पोहचता है

रिज़क भी इन्सान को तलाश करता है और मौत भी इन्सान को तलाश करती है मगर रिज़क मौत से ज़्यादा तेज़ रफतार है ये मौत से पहले बन्दे तक पोहचता है, दूसरी ज़रूरी बात ये है के सूद का काम करने से इन्सान अल्लाह का दुशमन बन जाता है, वो अल्लाह से जंग

करता है, जो बन्दा चटान से अपना सर मरेगा तो वो अपना ही सर फोडेगा, जो अल्लाह से जंग करेगा वो अपनी तबाही का खुद ही ज़ीम्मेदार होगा.

10. ज़िन्दगी के मकसद को पेहचानिये

अल्लाह का इरशाद है और नही पैदा किया जिन्नातो और इन्सानो को मगर इबादत ले लिये, और आगे फरमाया हम इन से रोज़ी कमाने नही चाहते है और ना ये चाहते है के वो मुझे खाना खिलाये, हम नही चाहते के सुबह से शाम तक गधे की तरह काम मे लगे रहे, और नमाज़ो का भी होश ना रहे, बल्के अपने मकसद को सामने रखना चाहिये, बाकी रही रिज़क की बात, वो तो अल्लाह पोहचा ही देते है.
बायज़ीद बुसतामी का यकीन- उन्होने किसी के पीछे नमाज़ पढी, बाद मे इमाम से तारूफ हुवा, इमाम ने पूछा आपका रोज़ी का जरिया क्या है, कहा से खाते है? जवाब दिया, सबर करो, मे जरा नमाज़ लोटा लू जो तुम्हारे पीछे पढी है इसलिये के तुम्हे मखलूक को रिज़क देने वाले मे शक हो गया है.

11. सबसे बडा फितना

सूद की वजह से माल की बरकत खतम हो जाती है,

और ज़कात अदा करने की वजह से माल मे बरकत शुरू हो जाती है, और बरकत किस को कहते है? वो रिज़्क जो आदमी की ज़रूरीयात के लिये काफी हो जाये, गैरो के सामने हाथ ना फेलाना पडे, जितना रिज़्क हो आदमी सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारे.
आज के दौर का सब से बडा फितना यही है की काश हमे भी वो मिलता जो कारून को मिला था. (सुरे कसस 79)

12. ताकतवर बनकर मेहनत करो

शफीक बलखी(रह) रोज़ी कमाने के लिये किसी दुसरे शहर का सफर करना चाहते थे, दोस्तो से मिलकर चले गये, कुछ दिनो के बाद अपने शहर मे वापस आगये, इब्राहीम बिन अदहम(रह) ने पूछा क्या हुवा? केहने लगे के रास्ते मे था, एक ज़खमी चिडया को देखा के वो उड नही सकती थी, उसके पास एक सेहतमद चिडया आयी, और एक दाना उसके सामने डाला, जो ज़खमी चिडया ने खालिया, ये देख कर मेने सोचा के जो अल्लाह अपाहिज़ चिडया को रिज़्क दे सकता है, वो मुझे भी देगा, इसलिये मे वहा से वापस आगया, ये सुन कर इब्राहीम बिन अदहम(रह) ने कहा अपाहिज़ो का तरीका मत अपनावो, ताकतवर बनकर मेहनत करो कमावो खुद भी खावो और अल्लाह के बन्दो को भी

खिलावो, शरियत हरगिज़ ये नही कहती के अपाहिज़ बनकर पडे रहो, बल्के शरियत ने तो कहा है के हलाल रिज़्क कमाना ये भी फरीज़ा है, साथ मे ये भी कहा की इसमे इतना भी ना लग जावो के नमाज़े ही कज़ा कर बेठो, और कहो के मुझे नमाज़ के लिये फुरसत नही है.